गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कह्या रसूल।
खैंच लेवें दिल साथ को, सब पर होए सनकूल।। २१ ।।

रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि ऐसी ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते सिरदार भी उनके लिए ऐसा ही होना चाहिए जो सुन्दरसाथ के दिलों को प्रसन्न करके जीत ले।

ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार।
बोहोत कह्या मेरे धनी ने, तुम करोगे केता विचार।। २२ ।।

मैंने तो तुम्हारे समझाने के लिए संक्षेप में कहा है, पर इसका विस्तार बहुत भारी है। मेरे धनी ने तो बहुत कुछ कहा है। तुम कहां तक विचार करोगे?

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार।। २३ ।।

इस प्रकार धनी श्री देवचन्द्रजी और कुरान की गवाही लेकर महामतिजी सुन्दरसाथ को पुकार कर कहते हैं कि हे साथजी! समझ सको, तो समझ लेना। चाहे वह ब्रह्मसृष्टि है या वह ईश्वरीसृष्टि है।

।। प्रकरण ।। ९५ ।। चौपाई ।। १३९९ ।।

राग श्री

तो भी घाव न लग्या रे कलेजे

ना लग्या रे कलेजे, जो एते देखे धनी गुन।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की इतनी मेहरबानी देखकर भी कलेजे में चोट नहीं लगी। करोड़ों ब्रह्माण्ड जिसके एक पल में पैदा और फना होते हैं, वह भी हमारे दर्शन चाहता है।

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूं अपनी बीतक।
धनिए मोको मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं अपनी आप बीती बताती हूं। मुझे इस बात की हैरानी है कि धनी ने मुझ पर मेहर करके मुझे प्राणनाथ बना दिया।

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूं अनुभव की बात।
मोको मिले इन बिध सों, श्री धाम धनी साख्यात।। ३ ।।

मैं अपने अनुभव की बात बताती हूं जिसे मानना हो वह मान लेना। मुझे इस तरह से साक्षात् धाम-धनी मिले हैं।

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक।
अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क।। ४ ।।

पीछे तो चौहद लोकों के जीव भी ईमान लाएंगे, परन्तु सबसे पहले ब्रह्मसृष्टि जिनके अन्दर ईमान और इश्क है, यकीन लाएंगे।

ए बात नीके विचारियों, ज्यों तुमें साख देवे आतम।
पीछे साख दुनी सब देयसी, ऐसा किया खसम।। ५ ।।

अब जिस तरह से तुम्हारी आत्मा गवाही दे उस तरह से विचार करना। धनी ने ऐसी मेहरबानी की है। बाद में तो सारी दुनियां मानेगी।

Nijanand App

मैं तो कछू न जानती, श्री स्यामा जी दई खबर।
अपन आए खेल देखने, धाम अपना घर।।६ ।।

मुझे तो कुछ भी सुध नहीं थी। मुझे श्यामाजी ने आकर बताया कि हम परमधाम से खेल देखने आए हैं और अपना घर परमधाम है।

मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन।
साथ जी मिल के चलिए, जाइए अपने वतन।।७ ।।

और यह कहा कि धनी ने तुमको बुलाने के वास्ते मुझे भेजा है, इसलिए हे साथजी! मिलकर आओ। अपने घर चलें।

हम ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अछर खेल देखन।
खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन।।८ ।।

हम ब्रह्मसृष्टियां परमधाम से अक्षर का खेल देखने आई हैं। खेल देखकर घर (परमधाम) में अपने असल तन में जाग जाएंगे।

साहेब तो पूरा मिल्या, तब थी मैं लड़कपन।
पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन।।९ ।।

मुझे तो धनी (पूर्ण ब्रह्म) मिले। पर उस समय मेरे में बचपना था, इसलिए मुझको अपनी पहचान कराने के वास्ते उन्हें बहुत कुछ समझाना पड़ा।

सो मैं कछू ना दिल धरे, भूल गई अवसर।
कई विध करी जगावने, पर मैं जागी नहीं क्यों ए कर।।१० ।।

उनके समझाने पर भी मैं भूल गई और कुछ याद न रहा। कई तरह से धनी ने मुझे जगाया, पर मैं किसी तरह से भी नहीं जागी।

मोहे चलते बखत बुलाए के, जाहेर करी रोसन।
धाम दरवाजे इंद्रावती, ठाढ़ी करे रुदन।।११ ।।

तब श्री देवचन्द्रजी ने तन छोड़ते समय मुझे बुलाकर साफ कहा कि धाम के दरवाजे पर इन्द्रावती खड़ी रुदन कर रही है (धाम दरवाजा यानि इन्द्रावती का दिल)।

कहे मोहे अकेली छोड़ के, तुम धाम चलो क्यों कर।
पीछे मैं दुनियां मिने, क्यों रहूंगी तुम बिगर।।१२ ।।

इन्द्रावतीजी कह रही हैं कि धनी! मुझे खेल में अकेला छोड़कर कैसे धाम जाओगे? तुम्हारे बिना मैं दुनियां में कैसे रहूंगी?

एह वचन स्यामाजीएं, सब साथ को कहे सुनाए।
इन्द्रावती आए बिना, हम धाम चल्यो न जाए।।१३ ।।

यह वचन श्यामाजी ने सब साथ के सामने सुनाकर कहे कि इन्द्रवती के आए बिना हम धाम नहीं जा सकते।

एक रस आतम करके, आप हुए अन्तराए।
अनुभव कराए जुदे हुए, पर लग्या न कलेजे घाए।।१४ ।।

तब बुलाकर के मेरे विरह के दुःख मिटाकर अन्तर्ध्यान हो गए। जुदाई के वक्त में भी तरह-तरह के ज्ञान दिए, पर मेरे कलेजे में चोट नहीं लगी (२२ दिन अपने पास रखकर एक रस कर दिया)।

Nijanand App

अन्तरगत में रेहे गए, धनी के दो एक सुकन।
ए दरद न काहूं बांटिया, सो मैं कह्या न आगे किन।। १५ ।।

उनके धाम चलने के बाद मुझे उनकी दो चार बातें याद रह गईं। इस विरह के दर्द में मैंने वह भी किसी को बताईं नहीं।

मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान न हुई पूरन।
तब आप अंदर आए के, बहु बिध करी रोसन।। १६ ।।

मुझे धनी ने बहुत तरह से समझाया पर मैं पूरी पहचान न कर सकी। तब धनी स्वयं ही अन्दर आकर बैठ गए।

अंदर मेरे बैठ के, कई विध कियो विस्तार।
सो रोसनी जुबां क्यों कहे, वाको वाही जाने सुमार।। १७ ।।

मेरे अन्दर बैठकर कई तरह से धनी ने वाणी का विस्तार किया। उस ज्ञान की बातों को जबान से कैसे कहा जाए? इन बातों को वही जानते हैं।

तब कछूक मोको सुध भई, कछुक भई पेहेचान।
ए दरद कहूं मैं किनको, धनी हो गए अन्तरध्यान।। १८ ।।

जब धनी स्वयं अन्दर बैठ गए तो मुझे कुछ सुध आई और उससे कुछ पहचान हुई। अब धनी अन्तर्ध्यान हो गए। उनके वियोग के दर्द की बातें किससे कहूं?

मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्मांड।
तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड।। १९ ।।

मेरे दिल में ऐसा लगा कि हमने इस माया के खेल को देखा है तो दुनियां वाले भी क्या जानेंगे यदि हम इनको अखण्ड नहीं करते।

बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम।
हम दें मुक्त सबन को, जाए मिलें खसम।। २० ।।

हमने अपने ही बात को दुनियां के मुख से सुना कि हम दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर धनी से मिलने वाले हैं।

वचन हमारे धाम के, फैले हैं भरथ खंड।
अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त ब्रह्मांड।। २१ ।।

हमारे घर की वाणी भारतवर्ष में फैल गई है। अब चौदह लोकों में फैलेगी और सारे ब्रह्माण्ड को मुक्ति मिलेगी।

धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन।
आखिर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब आकीन।। २२ ।।

धनी ने रसूल साहब के हाथ कुरान को भेजा और कहा कि दुनियां में सच्चे पैगम्बर बनकर बताओ कि वक्त आखिरत को धनी आएंगे तो तुम उन पर यकीन लाना।

ए बंध धनिएं पेहेले बांधे, सो लिखे मांहें फुरमान।
इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान।। २३ ।।

यह विधान धनी ने आने से पहले ही कुरान में लिखवा दिया कि इस जमीन पर पारब्रह्म आएंगे और सारी दुनियां को दर्शन देंगे।

Nijanand App

ले हिसाब सबन पे, करसी कजा अदल।
भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल।। २४ ।।

वह सारी दुनियां के जीवों का हिसाब कर न्याय करेंगे तथा सबके दिलों को साफ करके चर-अचर जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछू सुनिया कान।
सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान।। २५ ।।

जिस धनी को आज दिन तक किसी ने देखा नहीं और न ही इस बारे में किसी ने कुछ सुना, वही पारब्रह्म अब यहां आकर सब दुनियां को अखण्ड करेंगे।

फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर।
कह्या रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर।। २६ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान लाकर संसार को सूचित कर दिया कि सारे ब्रह्माण्ड का मालिक आएगा और अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का सवेरा करेगा।

रूह अल्ला की आवहीं, जो ईश्वरों का ईस।
सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस।। २७ ।।

यह भी कहा कि रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) जो सब ईश्वरों के ईश्वर हैं, वह इस दुनियां में आकर चालीस वर्ष तक बादंशाही करेंगे।

मारेगा कलजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर।
तिनको काट काढ़सी, टालसी उलटो फेर।। २८ ।।

वह, कलियुग जो चौदह तबकों में अज्ञानता का अन्धेरा है, तारतम वाणी के ज्ञान से उसे खत्म कर ज्ञान का सवेरा करेंगे। सबकी अज्ञानता मिटाकर झूठ की पूजा को हटाकर पारब्रह्म की पूजा कराकर एक रस करेंगे।

दज्जाल सरूप अंधेर को, आखिर ईसा मारसी ताए।
पेहेले निरमल करके, लेसी कदमों सुरत लगाए।। २९ ।।

दज्जाल स्वरूप अज्ञानता के अन्धकार को आखिरी ईसा रूह अल्लाह (श्यामाजी महारानी) ही तारतम ज्ञान के सवेरे से मिटा डालेंगे। पहले उनके जीवों के संशय को मिटा कर निर्मल करेंगे और उनकी सुरता को अपने चरणों में लगा लेंगे।

पीछे प्रले करके, लेसी तुरत उठाए।
चौदे तबक सचराचर, देसी भिस्त बनाए।। ३० ।।

पीछे ब्रह्माण्ड का प्रलय कर सब जीवों को तुरन्त योगमाया के ब्रह्माण्ड (अक्षर के मन अव्याकृत स्वरूप) में अखण्ड कर देंगे।

खासी उमत जो अहमदी, आई अर्स से उतर।
ताए अपना इलम देय के, ले चलसी अपने घर।। ३१ ।।

श्यामा महारानी के जो खासल खास जमात (ब्रह्मसृष्टियां) परमधाम से उतर कर आई हैं, उनको अपने जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान कराकर अपने घर ले जाएंगे।

Nijanand App

यों लिख्या फुरमान में, आखिर बीच हिंदुअन।
मुलक होसी नबियन का, धनी दई बड़ाई इन।। ३२ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि आखिरत को हिन्दुओं के बीच सब नबी आएंगे। सारे भारतवर्ष में ही ब्रह्मसृष्टियां उतरेंगी। धनी ने ब्रह्मसृष्टियों को बड़ाई दी है।

फुरमान जाहेर पुकारहीं, बीच हिंदुओं भेख फकर।
पातसाही करसी महंमद, आखिरी पैगंमर।। ३३ ।।

फरमान में यह भी लिखा है कि हिन्दुओं के तनों में ब्रह्मसृष्टियां उतरेंगी और उनमें आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की हुकूमत होगी और उनके साथ आखिरी पैगम्बर रसूल साहब होंगे।

सो महंमद आगूं भेजिया, केहेने वचन आगम।
सो खास उमत आई इत, ए जो लेने आए हम।। ३४ ।।

रसूल मुहम्मद को आखिरी पैगम्बर बनाकर भविष्य की वाणी देकर भेजा। उसी खास उम्मत (ब्रह्मसृष्टि को) जो यहां आई है, उसे लेने के वास्ते हम आए हैं।

ए सब्द सारे महंमदें, आए पेहेले किया पुकार।
महंमद मेंहेदी रूहअल्ला, आखिर वाही सिर मुद्दार।। ३५ ।।

मुहम्मद साहब ने पहले से आकर इस बात को जाहिर किया कि मुहम्मद मेंहदी और रूह अल्लाह आखिरत के वक्त आएंगे और सबका न्याय चुकाएंगे।

खोल हकीकत मारफत, बताए कयामत के दिन।
कई विध बंध धनिएं बांधे, अपनी उमत के कारन।। ३६ ।।

हकीकत और मारफत को खोलकर कयामत को जाहिर किया और अपनी उम्मत के वास्ते कयामत के दिन के निशान लिखे।

विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए।
मुक्त देसी सबन को, मेट सबे असुराए।। ३७ ।।

विजियाभिनन्द बुधजी और निष्कलंक (श्री प्राणनाथजी) यहां आकर सबकी अज्ञानता मिटाकर सबको अखण्ड करेंगे।

दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन।
जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान।। ३८ ।।

हिन्दुओं की किताबों में भी उनके जाहिर होने के दिन लिखे हैं। जो गवाही हिन्दुओं के ग्रन्थों में है वही गवाही कुरान में भी है।

कई बिध धनिएं ऐसा लिख्या, देने चौदे तबकों ईमान।
सो धाम धनी इत आए के, कराई सबों पेहेचान।। ३९ ।।

चौदह तबकों को ईमान देने के वास्ते कई तरह से धनी ने ऐसा लिखवाया है। उसी लिखे अनुसार धामधनी यहां आकर अपनी पहचान करा रहे हैं।

यों साख आतम देवहीं, वचन आगम के देख।
देने ईमान सबन को, यों बिध बिध लिखे विसेख।। ४० ।।

इन भविष्यवाणियों को देखकर आत्मा गवाही देगी और स्वीकार करेगी। सबको इस तरह से ईमान देने के वास्ते ही तरह-तरह से भविष्यवाणियों में लिखा है।

Nijanand App

महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप।
आखिर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी आप।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धाम के धनी आकर मुझे मिले। आखिरी सुन्दरसाथ को सुख देने के लिए यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी।

।। प्रकरण ।। ९६ ।। चौपाई ।। १४४० ।।

राग श्री

इन धनी के बान मोको ना लगे
मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम।
तो भी इस्क न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम।। १ ।।

मैंने कौन से ऐसे खोटे काम किए हैं जिसके कारण धनी की वाणी की चोट मुझे नहीं लगी। मुझे धनी से मिलने का इश्क नहीं आया। यह कैसा बड़ा जुल्म हुआ?

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ।
सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ।। २ ।।

धनी (माशूक) की जरा सी इशारत मिलने पर आशिक (ब्रह्मसृष्टि) का जीव धनी के बिना एक पल भी नहीं रहता।

सो भी पिउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड।
मेरो तो जीउ पिउ धाम को, ए जो अछरातीत अखंड।। ३ ।।

वह भी इस संसार के आशिक और माशूक ऐसा करते हैं और मेरी तो आत्मा परमधाम की है और मेरे धनी अक्षरातीत हैं जो अखण्ड हैं।

ऐसी प्रीत जीव सृष्ट की, जाके पिउ विष्णु सेखसांई।
वाको रटत जात अहनिस, ब्रह्म अछर सुध न पाई।। ४ ।।

जीवसृष्टि की ऐसी प्रीति है जिनके मालिक विष्णु भगवान और शेषशायी नारायण हैं और उनको ही ये रात-दिन जपती है। उन्हें अक्षर ब्रह्म तक की सुध नहीं है।

कोट ब्रह्मांड नूर के पल थें, यों कहे सास्त्र त्रिगुन।
सो अछर किने न दृढ़ किया, न दृढ़ किया इनों वतन।। ५ ।।

शास्त्र और त्रिगुण (वेद) कहते हैं कि अक्षर ब्रह्म के एक पल में कई ब्रह्माण्ड बनते मिटते हैं। वह अक्षर ब्रह्म कौन है तथा उनका घर कहां है, यह किसी ने नहीं बताया।

सो अछर अछरातीत के, आवे दरसन नित।
तले झरोखे आए के, कर मुजरा घरों फिरत।। ६ ।।

वह अक्षरब्रह्म अक्षरातीत के दर्शन करने के लिए नित्य आते हैं और चांदनी चौक में नीचे आकर झरोखे से श्री राजजी महाराज के दर्शन कर अपने घर अक्षर धाम में लौट जाते हैं।

सो ए धनी अछरातीत, इत आए मुझ कारन।
अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध आन वतन।। ७ ।।

वही अक्षरातीत धनी मेरे वास्ते यहां आ रहे हैं। मुझे अंगना जानकर अपनाया और घर की निसबत और हकीकत बताई।

Nijanand App